पश्चिम बंग तथा असम में सबसे अधिक प्रमाणित बिक्रीवाला हिन्दी दैनिक

SANMARG ॥श्रीहरिः॥ Regd. No. WB/NC-102

सन्मार्ग

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै नमोऽस्तुरुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तुचन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः

ALCUTTA, 14 JUNE 1999 शुद्ध ज्येष्ठ शुक्लपक्ष प्रतिपदा १, विक्रमीय संवत् २०५६, सोमवार, १४ जून १९९९ (डाक १५ जून, १९९९)

'कर्कटोल' से कैंसर के इलाज का दावा

जयपुर. १३ जून (एजेंसियां)। आयुर्वेदिक दवाओं से कैंसर का निदान खोजने में लगे डा. नंदलाल तिवारी का कहना है कि नयी दिल्ली के आयुर्विज्ञान संस्थान के भेषज विज्ञान विभाग ने भी 'कर्कटोल' दवा का चूहों पर परीक्षण कर उसे सुरक्षित पाया है। डा. तिवारी ने कई वर्षों के प्रयास से 'कर्कटोल' नामक आयुर्वेदिक दवा तैयार की है जो उनके अनुसार गर्भाशय तथा भोजन नली के कैंसर और रक्त कैंसर के इलाज में कारगर सिद्ध हो रही है। डा. तिवारी ने बातचीत में कहा कि लंदन की प्रतिष्ठित लाइम एण्ड मार्टिन प्रयोगशाला ने भी यह निष्कर्ष निकाला है कि यह दवा पूरी तरह सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि कर्कटोल पर आगे और गहन अनुसंधान की जरूरत है।

डा. तिवारी ने कहा कि वह 'कर्कटोल' दवा की आधुनिक तरीके से प्रामाणिकता की जांच कराने के लिए केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय को कई बार लिख चुके हैं। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने भी इस दवा के क्लीनिकल परीक्षण संबंधी परियोजना पर चुप्पी साध रखी है और निजी स्तर पर विदेशों से यह परीक्षण कराने पर लाखों रुपये खर्च होते हैं। उन्होंने बताया कि कैंसर के इलाज के लिए वर्तमान चिकित्सा पद्धति में जो दवाएं उपलब्ध हैं वे अपने जहरीले प्रभाव से ही कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करती हैं जबकि 'कर्कटोल' के साथ ऐसा नहीं है। दूसरे यह दवा बहुत सस्ती है। उन्होंने कहा कि 'कर्कटोल' दवा की विदेशों से मांग आने पर पिछले कुछ वर्षों से इसे कैप्सूल का रूप दिया गया है।

उन्होंने कहा कि कई विदेशी विशेषज्ञ डाक्टर भी कैंसर मरीजों को चिकित्सा के लिए उनके पास भेज रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि आखिरी स्टेज के करीब ४० से ५० प्रतिशत मरीजों को उनकी दवा से लाभ हुआ है। नागौर जिले के नीमड़ी कलां के निवासी डा. तिवारी ने साठ के दशक में असम तथा दार्जिलिंग में चाय बगानों का प्रबंध देखते समय कैंसर रोग की आयुर्वेदिक दवाओं की खोजबीन की। बाद में उन्होंने वैद्य विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण करके कैंसर चिकित्सा के अनुसंधान में लग गये। इन दिनों वह कैंसर का पता लगाने वाली दवा बनाने का प्रयास कर रहे हैं। डा. तिवारी ने विस्तृत परीक्षण के बाद कहा यह दवा द्रव पदार्थ के रूप में होगी जिसे जीभ पर लगाते ही यह पता चल जायेगा कि रोगी को कैंसर है अथवा नहीं। इसके बाद विस्तृत परीक्षण कराना उपयोगी होगा।

राजस्थानी सपूत ने कैंसर का इलाज खोजा

आज हमें विज्ञान पर गर्व है जिसकी बदौलत मानव अंतरिक्ष में स्वछन्द रूप से विचरण करने लगा है। वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों से विभिन्न क्षेत्रों में नई खोजें की जा रही हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में घातक बीमारियों के इलाजखोज लिये गये हैं। लेकिन इस सबके बावजूद कैंसर ऐसारोग है जो आज भी विज्ञान की खिल्ली उड़ा रहाहै। डाक्टर जब कैंसर की बात सुनते हैं तो वे हताश हो जाते हैं। उनके पास अब इस बीमारी के इलाज के लिए जो दवाएं हैं, वे केवल कैंसर के मरीज को कुछ दिनों तक और जीवित रखने के लिए सक्षम है लेकिन बीमारी को समूल खत्म कर दें, ऐसी दवा अभी तक ईजाद नहीं की गई है।

लेकिन आपको आश्चर्य होगा कि राजस्थान की माटी के एक सपूत ने कैंसर इलाज की ऐसी दवा ईजाद की है जिससे कैंसर जैसा प्राणलेवा रोग हमेशां-हमेशा के लिए खत्म हो जाता है। ये हैं श्री नन्द लाल तिवाड़ी। श्री तिवाड़ी चन्दारून रोड, डेगानाजंक्शन,जिला. नागौर के मूल निवासी हैं।

श्री तिवाड़ी ने एक भेंट में बताया कि वे दो दशक से भी अधिक पहले से कैंसर रोग के चिकित्सा अनुसंधान कार्य में लगे हुए हैं और अथक प्रयासों के बाद वे जड़ी-बूटियों से तैयार दवाओं से कैंसर रोग पर नियंत्रण पाने में सफल हुए हैं।

श्री तिवाड़ी का दावा है कि जड़ी बूटियों से तैयार दवा को वे अब तक मर्कईमरीजों पर आजमा चुके हैं और इसमें उन्हें ७० से ८० प्रतिशत तक सफलता मिली है।

आपका कहना है कि यदि पहली स्टेज में ही कैंसर होने के संकेत मिल जायें या शक हो जाय तो वे दवा देना शुरू कर देते हैं। इससे मर्ज पर जल्दी काबू पा लिया जाता है। लेकिन यदि उस व्यक्ति के कैंसर नहीं भी हो तो भी यह दवा किसी तरह का नुकसान नहीं करती है।

वैसे इन दिनों श्री तिवाड़ी की चिकित्सा सेवा स्थल महाराष्ट्र रहा है। आपका गोंदिया (महाराष्ट्र) में मुनीम मेडिकल स्टोर्स है जहां आप मरीजों की चिकित्सा करतेहैं। इसके अलावा आप दार्जिलिंग आदि स्थानों पर रह कर भी कैंसर मरीजों की चिकित्सा कर चुके हैं। आपने बताया कि हड्डी के कैंसर के लिए दवा अलग से देनी पड़ती है।

यह पूछे जाने पर कि आपकी दवा जब इतनी कारगर है तब सरकार के माध्यम से आप उसका उपयोग नहीं करते तो श्री तिवाड़ी ने बताया कि वे अपना फार्मूला सरकार को देने को तैयार हैं लेकिन पहले सरकार उनको इसकी क्रेडिट तो दे। सरकार चाहे तो उनकी दवा का परीक्षण करले और यदि वह खरी उतरे तो उसकी घोषणा करे। तब ही वे फार्मूला बता सकते हैं।

श्री तिवाड़ी जी ने बताया कि सरकार अब तक उनसे दवा का फार्मूला मांगती रही है लेकिन परीक्षण करने के लिए तैयार नहीं

श्री नन्दलाल तिवाड़ी

होती। उन्होंने शंका जाहिर की कि यदि वे फार्मूला बता दें तो उसकी क्रेडिट मुझे न मिलकर कोई प्रभावशाली डाक्टर उठा लेगा।

श्री तिवाड़ी ने बताया कि जब तक यह पता नहीं चले कि कैंसर क्यों होता है, तब तक उसका निदान नहीं खोजा जा सकता। आपने दावा किया कि उन्होंने कैंसर के ऐसे रोगी भी स्वस्थ किये हैं जिन्हें बम्बई के टाटा मेमोरियल अस्पताल से यह कह कर छुट्टी दे दी गईथी कि उनके जीवन के गिने चुने दिन हैं, इसलिए इन्हें परिवार के बीच मरने दो। ऐसे मरीजों में डाक्टरों व उच्चाधिकारियों के रिश्तेदार भी थे।

हालांकि श्री तिवाड़ी महाराष्ट्र में ही रहते हैं, लेकिन वे जब भी जयपुर आते हैं तो वे श्री विमल कुमार मकान नं. १२६१, हनुमान गली बाबा हरिश्चन्द्रमार्ग, के यहां ठहरते हैं। वे राजस्थान के मरीजों से सम्पर्क भी उपरोक्त पते के माध्यम से करते हैं। आपने बताया कि कैंसर का इलाज खोजे जाने की शोहरत उन्हें नहीं चाहिए, लेकिन वे मानव समाज की सेवा करने के इच्छुक हैं। इसलिए जो मरीज उनके पास आ जाते हैं उनका इलाज वे सेवा भावना से करते हैं।

गांवों में उल्टी दस्त का प्रकोप

सुजानगढ़ (एस)। निकटवर्ती रतनगढ़ तहसील के गांव शेरमसर में भयंकर गर्मी से उल्टी दस्त एवं हैजा की बीमारियां फैलने लगी है। इस गांव में करीब ३० व्यक्ति इस बीमारी से पीड़ित है जिनको चिकित्सा की जा रही हैं। चिकित्सा विभाग की टीम ने इस गांव सहित अन्य गांवों में भ्रमण कर रोकथाम के प्रयास किये। डा. प्रकाश कायवाल के अनुसार गांवों में ५०० हैजा निरोधक टीके लगाये गये और कुओं एवं जोहड़ों के दूषित पानी का शुद्धिकरण किया जा रहा है। सुजानगढ़ तहसील के धोटड़ा एवं ५-६ गांवों में चोरी बंदरी बीमारी होने के समाचार मिले। यहां पर चिकित्सा की अभी तक कोई व्यवस्था नहीं की गई है।

रेल आंदोलनकारियों से केस वापिस लेने की मांग

राजलदेसर (निस)। संयुक्त नागरिक संघर्ष समिति ने जिलाधीश चूरू को पत्र लिखकर रेल ठहराव समाप्त करने के विरोध में प्रदर्शन कर रहे निर्दोष लोगों पर चलाये जारहे मुकदमें को वापिस लेने की मांग की है।

संयुक्त संघर्ष समिति के संयोजक ने पत्र में लिखा है कि भारत सरकार ने रेल ठहराव को समाप्त करने के फैसले को अब गलत ही साबित कर दिया है और दिल्ली बीकानेर मेल ट्रेन पूर्व की भांति राजलदेसर, श्री डूंगरगढ़, सूडसर, नापासर स्टेशनों पर रुकनी प्रारम्भ हो गयी है ऐसी स्थिति में मुकदमें चलाये जाने का कोई औचित्य नहीं रह जाता है।

संयुक्त नागरिक संघर्ष समिति के संयोजक ने जिलाधीश से आग्रह किया है कि इस मुद्दे पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जाये पत्र की प्रतिलिपि मुख्यमन्त्री, गृहराज्यमन्त्री, राज्यपाल, संसद सदस्य एवं क्षेत्रीय विधायक को भेजी गई है।

सब इन्स्पेक्टर रिश्वत लेते गिरफ्तार

सूरतगढ़, (निस)। स्थानीय रेल्वे सुरक्षा दलकेसबइन्स्पेक्टर रामलाल गुर्जर को पांच सौ रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया गया। रामलाल गुर्जर के रंगे हाथों को धुलाकर (रंगीला पानी) मुहरबन्द किया गया है। तथा एंटीकरप्शन के अधिकारीगण कार्यवाही सम्पूर्ण करने में लगे हुए है। प्राप्त विवरण के अनुसार सब इन्स्पेक्टर रामलाल गुर्जर ने रवि जैन नामक रेल्वे बुक स्टाल सूरतगढ़ के मामले को हल्का करने के लिए रिश्वत मांगी थी।